Acharya in Jain Darsham
SVDV

Set No. 1 Question Booklet No.

16P/268/8

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No. | | | | | | | | | | |

Roll No. (Write the digits in words) ..... Code No 291 .....

Serial No. of OMR Answer Sheet .....

Day and Date ..... 2016 .....

..... (Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only ***blue/black ball-point pen*** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall ***except the Admit Card without its envelope.***
3. ***A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.***
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. ***On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.***
6. ***No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.***
7. ***Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.***
8. ***Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.***
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR *Answer Sheet*** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages : 40 *[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]*

66

ROUGH WORK

रफ़ कार्य

16P/268/8

No. of Questions : 150

प्रश्नों की संख्या : 150

Time : 2 Hours

समय : 2 घण्टे

Full Marks : 450

पूर्णाङ्क : 450

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. ***One mark will be deducted for each incorrect answer***. **Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3** (तीन) अंकों का है। *प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।* प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक *शून्य* होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.
यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. जो पदार्थ जिस रूप में अवस्थित है, उसका उसी रूप में होना क्या कहलाता है ?

(1) पदार्थ (2) प्रमेय (3) द्रव्य (4) तत्त्व

यः द्रव्यः यस्मिन् रूपेण अवस्थितः, तस्य तस्मिन्नेव रूपेण भवनं किं कथयति ?

(1) पदार्थः (2) प्रमेयः (3) द्रव्यः (4) तत्त्वः

02. जैनदर्शन में तत्त्व कितने हैं ?

(1) पांच (2) सात (3) नौ (4) ग्यारह

जैनदर्शने कति तत्वानि सन्ति ?

(1) पञ्च (2) सप्त (3) नव (4) एकादश

03. कर्मों के आने के द्वार को क्या कहते हैं ?

(1) आस्रव (2) बन्ध (3) संवर (4) निर्जरा

कर्माणां आगमनद्वारं किं कथयति ?

(1) आस्रव: (2) बन्ध: (3) संवर: (4) निर्जरा

04. कर्मों का आत्मप्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिल जाने को क्या कहा जाता है ?

(1) योग (2) समवाय (3) बन्ध (4) संवर

कर्माणां आत्मप्रदेशभि: सह नीर-क्षीर इव मेलनं किं कथयति ?

(1) योग: (2) समवाय: (3) बन्ध: (4) संवर:

05. बन्ध के कितने भेद हैं ?

(1) चार (2) छह (3) आठ (4) दस

बन्धाना: कति भेदानि सन्ति?

(1) चत्वार: (2) षष्ठ: (3) अष्ट: (4) दश:

06. प्रकृतिबन्ध कितने प्रकार का है ?

(1) चार (2) आठ (3) बारह (4) सोलह

प्रकृतिबन्ध: कति प्रकारा: सन्ति ?

(1) चत्वार: (2) अष्ट: (3) द्वादश: (4) षोडश:

07. कर्मपरिणत स्कन्धो का आत्मा के साथ बने रहने के काल को क्या कहा जाता है ?

(1) प्रकृतिबन्ध (2) प्रदेशबन्ध

(3) स्थितिबन्ध (4) अनुभागबन्ध

कर्मपरिणतस्कन्धानां आत्मभि: सह निवासकाल: किं कथयति ?

(1) प्रकृतिबन्ध: (2) प्रदेशबन्ध: (3) स्थितिबन्ध: (4) अनुभागबन्ध:

08. प्रकृतिबन्ध और स्थितिबन्ध होने का मुख्य हेतु क्या है ?

(1) मिथ्यात्व (2) असंयम (3) योग (4) प्रमाद

प्रकृतिबन्ध: स्थितिबन्धश्च भवनं मुख्यहेतु: किं अस्ति?

(1) मिथ्यात्व (2) असंयम: (3) योग: (4) प्रमाद:

09. कर्मप्रकृतियों में रस-विशेष (शक्ति-विशेष) के पड़ने को क्या कहा जाता है ?

(1) स्थितिबन्ध (2) अनुभागबन्ध

(3) प्रकृतिबन्ध (4) प्रदेशबन्ध

कर्मप्रकृत्यासु रसविशेषपातनं किं कथयति ?

(1) स्थितिबन्ध: (2) अनुभागबन्ध: (3) प्रकृतिबन्ध: (4) प्रदेशबन्ध:

10. स्थितिबन्ध और अनुभागबन्ध होने में मुख्य कारण क्या है ?

(1) मिथ्यात्व (2) अविरत (3) प्रमाद (4) कषाय

स्थितिबन्ध: अनुभागबन्धश्च भवनं मुख्यहेतु: किमस्ति?

(1) मिथ्यात्व (2) अविरत: (3) प्रमाद: (4) कषाय:

11. समस्त कर्मबन्धनों से छूट जाने को क्या कहा जाता है ?

(1) आस्रव (2) संवर (3) निर्जरा (4) मोक्ष

सर्वकर्मबन्धनमुक्तावस्था किं कथयति?

(1) आस्रव: (2) संवर: (3) निर्जरा (4) मोक्ष:

12. तत्त्वों की संख्या में पुण्य और पाप मिलाने पर क्या बन जाते हैं ?

(1) परमाणु (2) पदार्थ (3) द्रव्य (4) स्कन्ध

तत्वसंख्यासु पुण्यपापश्च मेलने किं रचयति ?

(1) परमाणु: (2) पदार्थ: (3) द्रव्य: (4) स्कन्ध:

13. जैनदर्शनानुसार पदार्थों की संख्या कितनी है ?

(1) पांच (2) सात (3) नौ (4) ग्यारह

जैनदर्शनानुसारे पदार्थानां संख्या कियति ?

(1) पञ्च (2) सप्त (3) नव (4) एकादश

14. जो आत्मा को पवित्र करे या जिससे आत्मा पवित्र हो, वह क्या है ?

(1) पानी (2) पुण्य (3) प्रभुता (4) पावडर

यः आत्मानं पावनं करोति, येन आत्मा पवित्रं भवति वा सः किमस्ति ?

(1) जलं (2) पुण्यः (3) प्रभुता (4) पावडरः

15. किसके उदय से इष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती है ?

(1) पुण्यकर्म (2) पापकर्म (3) नामकर्म (4) गोत्रकर्म

केन उदयेन इष्टानां वस्तुनां प्राप्तिः भवति?

(1) पुण्यकर्मेण (2) पापकर्मेणं (3) नामकर्मेण (4) गोत्रकर्मेण

16. 'सत् ' किसका लक्षण है ?

(1) द्रव्य का (2) गुण का

(3) पर्याय का (4) नय का

''सत् '' इति कस्य लक्षणं अस्ति?

(1) द्रव्यस्य (2) गुणस्य (3) पर्यायस्य (4) नयस्य

17. जो द्रव्याश्रित हैं और स्वयं निर्गुण हैं, वे क्या कहलाते हैं ?

(1) प्रमाण (2) पर्याय (3) द्रव्य (4) गुण

यः द्रव्याश्रितः निर्गुणश्च, ते किं कथयन्ति ?

(1) प्रमाणः (2) पर्यायः (3) द्रव्यः (4) गुणः

18. द्रव्य की क्रमभावी अवस्था विशेष को क्या कहा जाता है ?

(1) पयार्य (2) प्रमाण (3) प्रमाद (4) प्रतिमा

द्रव्यस्य क्रमभावी-अवस्थाविशेषं किं कथयति ?

(1) पर्याय: (2) प्रमाण: (3) प्रमाद: (4) प्रतिमा

19. जैनदर्शन में गुण और पर्यायों वाला क्या कहलाता है ?

(1) पदार्थ (2) तत्त्व (3) द्रव्य (4) गुण

जैनदर्शने गुणपर्यायाश्चयुक्त: किं कथयति?

(1) पदार्थ: (2) तत्त्व: (3) द्रव्य: (4) गुण:

20. जैनदर्शन में द्रव्य कितने माने गये हैं ?

(1) दो (2) चार (3) छह (4) आठ

जैनदर्शने कति द्रव्याणि सन्ति?

(1) द्वि (2) चत्वारि (3) षष्ठ (4) अष्ट

21. अजीव द्रव्य कितने हैं ?

(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पांच

अजीवद्रव्याणि कति सन्ति?

(1) द्वि (2) त्रीणि (3) चत्वार (4) पञ्च

22. कौन-सा द्रव्य मूर्तिक है ?

(1) पुद्गल (2) धर्म (3) अधर्म (4) काल

क: दव्य: मूर्तिक:?

(1) पुद्गल (2) धर्म: (3) अधर्म: (4) काल:

23. जीव और पुद्गल को चलने में सहायक द्रव्य कौन-सा है ?

(1) धर्म द्रव्य (2) अधर्म द्रव्य

(3) आकाशद्रव्य (4) कालद्रव्य

जीवपुद्गलौ चलनयो: सहायकद्रव्य: क: अस्ति ?

(1) धर्मद्रव्य: (2) अधर्मद्रव्य: (3) आकाशद्रव्य: (4) कालद्रव्य:

24. सभी द्रव्यों को अवगाह कौन देता है ?

(1) धर्मद्रव्य (2) अधर्मद्रव्य

(3) आकाश द्रव्य (4) कालद्रव्य

सर्वद्रव्यान् अवगाहं क: ददाति?

(1) धर्मद्रव्य: (2) अधर्मद्रव्य: (3) आकाशद्रव्य: (4) कालद्रव्य:

25. किस द्रव्य के निमित्त से घड़ी-घंटा, दिन-रात, परत्वापरत्व आदि का लोकव्यवहार होता है ?

(1) जीवद्रव्य (2) पुद्गलद्रव्य

(3) आकाशद्रव्य (4) कालद्रव्य

कस्य द्रव्यस्य निमित्तेन घटि-घटिका -दिवा-रात्रि-परत्त्वा-परत्वादिलोक व्यवहारं भवति?

(1) जीवद्रव्य: (2) पुद्गलद्रव्य: (3) आकाशद्रव्य: (4) कालद्रव्य:

26. आकाशद्रव्य के कितने भेद हैं ?

(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पांच

आकाशद्रव्यस्य कति भेदा: सन्ति?

(1) द्वे (2) त्रय: (3) चत्वार: (4) पञ्च

27. अलोकाकाश में कौन-सा द्रव्य है ?

(1) केवल जीव
(2) केवल पुद्गल
(3) केवल आकाश
(4) केवल काल

अलोकाकाशे क: द्रव्य: अस्ति ?

(1) केवल-जीव: (2) केवल-पुद्गल: (3) केवल- आकश: (4) केवल-काल:

28. अस्तिकाय कितने हैं ?

(1) तीन (2) चार (3) पांच (4) छह

अस्तिाकाया: कति सन्ति?

(1) त्रय: (2) चत्वारा: (3) पञ्च (4) षष्ठ

29. कौन द्रव्य कायवान् नहीं है ?

(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) काल

क: द्रव्य: कायवानं न अस्ति?

(1) धर्म: (2) अधर्म: (3) आकाश: (4) काल:

30. जीव द्रव्य कितने प्रदेशी है ?

(1) संख्यातप्रदेशी
(2) असंख्यात प्रदेशी
(3) अनन्तप्रदेशी
(4) अनन्तानन्तप्रदेशी

जीवद्रव्य: कति प्रदेशीया: सन्ति?

(1) संख्यात- प्रदेशी
(2) असंख्यात- प्रदेशी
(3) अनन्त-प्रदेशी
(4) अनन्तानन्त- प्रदेशी

31. 'कालाणु' कैसा है ?

(1) एकप्रदेशी (2) बहुप्रदेशी

(3) मूर्तिक (4) कायवान

कालाणु: कथमस्ति ?

(1) एकप्रदेशी (2) बहुप्रदेशी (3) मूर्त्तिक: (4) कायवान्

32. अधर्म द्रव्य कैसा है ?

(1) अव्यापी (2) मूर्तिक (3) सक्रिय (4) निष्क्रिय

अधर्मद्रव्य: कथं भवति?

(1) अव्यापी (2) मूर्तिक: (3) सक्रिय: (4) निष्क्रिय:

33. मोटा-पतला, हल्का-भारी, छाया-आतप किस द्रव्य की प्रयायें हैं ?

(1) जीव की (2) पुद्गल की

(3) काल की (4) आकाश की

पीन-कृश:, लघु-गुरु:, छाया-आतप: कस्य द्रव्यस्य पर्याया: सन्ति?

(1) जीवस्य (2) पुद्गलस्य (3) कालस्य (4) आकाशस्य

34. जैनदर्शनानुसार 'शब्द' क्या है ?

(1) धर्म द्रव्य की पर्याय (2) जीव द्रव्य की पर्याय

(3) पुद्गल की पर्याय (4) आकाश का गुण

जैनदर्शनानुसारं 'शब्द:' किमस्ति?

(1) धर्मद्रव्यस्य पर्याय: (2) जीवद्रव्यस्य पर्याय:

(3) पुद्गलद्रव्यस्य पर्याय: (4) आकाशस्य गुण:

35. पांचों पापों का एकदेश त्याग करना क्या कहलाता है ।

(1) दिग्व्रत (2) देशव्रत (3) अणुव्रत (4) महाव्रत

पञ्चपापानां एकदेशत्याग: किमुच्यते ?

(1) दिग्व्रत: (2) देशव्रत: (3) अणुव्रत: (4) महाव्रत:

36. देव-शास्त्र-गुरु के सच्चे श्रद्धानी सद्गृहस्थ को जैनधर्म में क्या कहा जाता हैं ?

(1) श्रमण (2) श्रावक (3) श्रेष्ठी (4) सज्जन

देव-शास्त्र-गुरुन् प्रतिश्रद्धापूर्णं सद्गृहस्थं जैनधर्मे किमुच्यते ?

(1) श्रमण: (2) श्रावक: (3) श्रेष्ठी: (4) सज्जन:

37. श्रावक के प्रतिदिन अवश्य करणीय कार्य कितने होते हैं ?

(1) दो (2) चार (3) छह (4) आठ

श्रावकानां प्रतिदिने अवश्यकरणीयकर्माणि: कति भवन्ति?

(1) द्वि (2) चत्वारि (3) षष्ठ (4) अष्ट

38. श्रावक के कितने भेद हैं ?

(1) तीन (2) चार (3) पांच (4) छह

श्रावकस्य कति भेदा: सन्ति?

(1) त्रय: (2) चत्वार: (3) पञ्च (4) षष्ठ

39. जैनश्रावक के मूलगुण कितने हैं ?

(1) चार (2) छह (3) आठ (4) दस

जैनश्रावकानां मूलगुणानि कति भवन्ति?

(1) चत्वारि (2) षष्ठ (3) अष्ट (4) दश

40. अणुव्रत कितने होते हैं ?

(1) तीन (2) पांच (3) सात (4) नौ

अणुव्रतानि कति भवन्ति?

(1) त्रीणि (2) पञ्च (3) सप्त (4) नव

41. 'जिन' ने किस धर्म का उपदेश दिया है ?

(1) शैवधर्म का (2) वैष्णवधर्म का

(3) जैनधर्म का (4) वैदिक धर्म का

जिन: कस्य धर्मस्य उपदिशति स्म?

(1) शैवधर्मस्य (2) वैष्णवधर्मस्य (3) जैनधर्मस्य (4) वैदिकधर्मस्य

42. गृहण किये व्रत का / प्रतिज्ञा का पूर्णत: भंग होना क्या कहलाता है ?

(1) अतिक्रम (2) व्यतिक्रम

(3) अतिचार (4) अनाचार

पूर्णव्रतभङ्ग: किमुच्यते?

(1) अतिक्रम: (2) व्यतिक्रम: (3) अतिचार: (4) अनाचार:

43. व्रत के एकदेश भंग होने को क्या कहते हैं ?

(1) अतिचार (2) अनाचार (3) दुराचार (4) अत्याचार

एकदेशभङ्गीव्रतं किमुच्यते?

(1) अतिचार: (2) अनाचार: (3) दुराचार: (4) अत्याचार:

44. 'अपरिग्रह' कौन से क्रम का व्रत है ?

(1) तीसरे (2) चौथे (3) पांचवें (4) छठवें

अपरिग्रह: कस्य क्रमस्य व्रत: अस्ति?

(1) तृतीय: (2) चतुर्थ: (3) पञ्चम: (4) षष्ठ:

45. जैनाचार का मूल क्या है ?

(1) अहिंसा (2) सत्य (3) अचौर्य (4) ब्रह्मचर्य

जैनाचारमूलं किमस्ति ?

(1) अहिंसा (2) सत्य: (3) अचौर्य: (4) ब्रह्मचर्य:

46. मूर्च्छाभाव का त्याग कौन-से व्रत में होता है ?

(1) अहिंसा (2) अचौर्य (3) ब्रह्मचर्य (4) अपरिग्रह

मूर्च्छाभावस्य त्याग: कस्मिन् व्रते भवति?

(1) अहिंसा (2) अचौर्य: (3) ब्रह्मचर्य: (4) अपरिग्रह:

47. नैष्ठिक श्रावक के व्रतादि गुणों में उत्तरोत्तर विकास के स्थानों को क्या कहा जाता है ?

(1) प्रतिमा (2) गुणस्थान (3) मार्गणा (4) जीवसमास

नैष्ठिकश्रावकस्य व्रतादिगुणेषु उत्तरोत्तरविकासस्थानानां किं उच्यते?

(1) प्रतिमा (2) गुणस्थान: (3) मार्गणा (4) जीवसमास:

48. उत्कृष्टश्रावक की प्रतिमा कौन-सी होती है ?

(1) आठवीं (2) नवमीं (3) दसवीं (4) ग्यारहवीं

उत्कृष्टश्रावकस्य प्रतिमा का भवति?

(1) अष्टमी (2) नवमी (3) दशमी (4) एकादशी

49. 'ब्रह्मचर्य' कौन-से क्रम की प्रतिमा है ?

(1) पांचवीं (2) छठवीं (3) सातवीं (4) आठवी

ब्रह्मचर्य: काभ्यां क्रमाणां प्रतिमास्ति?

(1) पञ्चमी (2) षष्ठी (3) सप्तमी (4) अष्टमी

50. तीसरी प्रतिमा का नाम क्या है ?

(1) दर्शनप्रतिमा (2) व्रतप्रतिमा

(3) सामायिक प्रतिमा (4) सचित्तविरत प्रतिमा

तृतीया प्रतिमा नाम किं ?

(1) दर्शनप्रतिमा (2) व्रतप्रतिमा

(3) सामायिक प्रतिमा (4) सचित्तविरत प्रतिमा

51. 'अनुमतिविरत' कौन-सी प्रतिमा का नाम है ?

(1) आठवीं (2) नवमीं (3) दसवीं (4) ग्याहरवीं

'अनुमतिविरता' इति कस्या: प्रतिमाया: अभिधान: अस्ति?

(1) अष्टमी (2) नवमी (3) दशमी (4) एकादशी

52. 'श्रमणोपासक' किन्हें कहा जाता है ?

(1) श्रावकों को (2) श्रमणों को

(3) ऋषियों को (4) मुनिराजों को

'श्रमणोपासका:' कान् उच्यन्ते ?

(1) श्रावकस्य (2) श्रमणस्य (3) ऋषियस्य (4) मुनिराजस्य

53. पांचों पापों का मन-वचन-काय से जीवन पर्यन्त के लिए त्याग किन व्रतों में किया जाता है ?

(1) अणुव्रतों में (2) महाव्रतों में

(3) सामायिक में (4) देशव्रतों में

पञ्चपापानां मनसा वचसा-कायेन जीवनपर्यन्तत्याग: कस्मिन् व्रतेषु कुर्वन्ति ?

(1) अणुव्रतेषु (2) महाव्रतेषु (3) सामायिकव्रतेषु (4) देशव्रतेषु

54. श्रमणाचार प्रतिपादक ग्रन्थ कौन-सा है ?

(1) सागारधर्मामृत (2) मूलाचार

(3) रत्नकण्डश्रावकाचार (4) वसुनन्दिश्रावकाचार

श्रमणाचारप्रतिपादक: ग्रन्थ: क: अस्ति?

(1) सागारधर्मामृत: (2) मूलाचार:

(3) रत्नकरण्डश्रावकाचार: (4) वसुनन्दिश्रावकाचार:

55. श्रमणाचार और श्रावकाचार के विषयों का प्रतिपादन किसमें होता है ?

(1) प्रथमानुयोग में (2) करणानुयोग में

(3) चरणानुयोग में (4) द्रव्यानुयोग में

श्रमणाचाराणां श्रावकाचाराणां च विषयाणां प्रतिपादन: कस्मिन् भवति?

(1) प्रथमानुयोगे (2) करणानुयोगे (3) चरणानुयोगे (4) द्रव्यानुयोगे

56. 'ओम् ' (ॐ) में क्या गर्भित है ?

(1) पंचाचार (2) पंच महाव्रत

(3) पंच परमेष्ठी (4) पांच समिति

'ओम्' (ॐ) इति अस्मिन् किं गर्भित: ?

(1) पंचाचार: (2) पंचमहाव्रत: (3) पंचपरमेष्ठिन् (4) पञ्चसमिति:

57. आठों कर्मों से रहित परमेष्ठी कौन है ?

(1) अरिहन्त (2) सिद्ध (3) आचार्य (4) उपाध्याय

अष्टकर्मविरहितपरमेष्ठी क:?

(1) अरिहन्त: (2) सिद्ध: (3) आचार्य: (4) उपाध्याय:

58. साधु परमेष्ठी के मूलगुण कितने होते हैं ?

(1) आठ (2) पच्चीस (3) छत्तीस (4) अट्ठाईस

साधुपरमेष्ठिनस्य मूलगुणानि कति भवन्ति ?

(1) अष्ट: (2) पञ्चविंशति (3) षष्ठत्रिंशत् (4) अष्टविंशति

59. कौन-से व्रत साधु परमेष्ठी के मूलगुणों में **नहीं** है ?

(1) पांच महाव्रत (2) पांच समिति

(3) सात शेषगुण (4) सात शीलव्रत

कै: व्रतै: साधुपरमेष्ठिनस्य मूलगुणेषु **न** भवन्ति?

(1) पञ्चमहाव्रत: (2) पञ्चसमिति: (3) सप्तशेषगुण: (4) सप्तशीलव्रत:

60. वैराग्योत्पादक तत्त्वपरक चिन्तन क्या कहा जाता है ?

(1) ध्यान (2) साधना (3) अनुप्रेक्षा (4) समाधि

वैराग्योत्पादकतत्त्वपरकचिन्तन: किं कथ्यते ?

(1) ध्यान: (2) साधना (3) अनुप्रेक्षा (4) समाधि:

61. अनुप्रेक्षाओं को यह भी कहा जाता है :

(1) मैत्रीभावना (2) प्रमोदभावना

(3) कारुण्यभावना (4) बारह भावना

अनुप्रेक्षाणां अपरं नाम अस्ति –

(1) मैत्रीभावना (2) प्रमोदभावना (3) कारुण्य भावना (4) बारह भावना

62. लोक के स्वरूपादि का चिन्तन किस भावना में किया जाता है ?

(1) निर्जराभावना में (2) लोकभावना में

(3) बोधि दुर्लभ भावना में (4) धर्मभावना में

लोकेन स्वरूपादिचिन्तनं कस्यां भावनायां करोति?

(1) निर्जराभावनायां (2) लोकभावनायां

(3) बोधिदुर्लभभावनायां (4) धर्मभावनायां

63. "दलबल देवी देवता मात-पिता परिवार।

मरती बिरियां जीव को कोई न राखनहार।।"

यह कौन-सी भावना है ?

(1) अनित्यभावना (2) अशरण भावना

(3) संसारभावना (4) एकत्वभावना

"दलबल देवी देवता मात-पिता परिवार।

मरती बिरियां जीव को कोई न राखनहार।।"

इयम् कीदृशी भावनास्ति ?

(1) अनित्य भावना (2) अशरण भावना (3) संसारभावना (4) एकत्व भावना

64. शरीर से आत्मा की भिन्नता का अनुचिन्तन किस भावना में होता है ?

(1) एकत्वभावना में (2) अन्यत्वभावना में

(3) अशुचिभावना में (4) आस्रवभावना में

'शरीरेण आत्मन: भिन्नत्वं' इति भावस्यानुचिन्तनं कस्यां भावनायां भवति?

(1) एकत्व-भावनायां (2) अन्यत्व- भावनायां

(3) अशुचि- भावनायां (4) आस्रवभावनायां

65. संसार की असारता का अनुचिन्तन किस अनुप्रेक्षा में होता है ?

(1) अशरणानुप्रेक्षा (2) लोकानुप्रेक्षा

(3) संसारानुप्रेक्षा (4) धर्मानुप्रेक्षा

संसारस्य असारत्वानुचिन्तन कस्यां अनुप्रेक्षायां भवति ?

(1) अशरणानुप्रेक्षा (2) लोकानुप्रेक्षा (3) संसारानुप्रेक्षा (4) धर्मानुप्रेक्षा

66. अन्धविश्वास से प्रेरित होकर प्रयोजन का विचार किये बिना लौकिक कार्य करना क्या कहलाता है ?

(1) लोकभावना (2) लोकमूढ़ता

(3) देवमूढ़ता (4) गुरुमूढ़ता

अन्धविश्वासेन प्रेरितं भूत्वा प्रयोजनस्य विचारे बिना लौकिककार्यसम्पादनं किं उच्यते ?

(1) लोकभावना (2) लोकमूढ़ता (3) देवमूढ़ता (4) गुरुमूढ़ता

67. उत्तमक्षमादि धर्मों की आराधना किस पर्व में की जाती है ?

(1) रक्षाबन्धन पर्व (2) दीपमालिका पर्व

(3) अष्टान्हिका पर्व (4) दसलक्षण पर्व

उत्तमक्षमादिधर्माणां आराधना कस्मिन् पर्वे भवति?

(1) रक्षाबन्धन पर्वे (2) दीपमालिका पर्वे (3) अष्टान्हिका पर्वे (4) दसलक्षण पर्वे

68. जैनधर्म में उत्तमक्षमादि कितने धर्म माने गये हैं ?

(1) छह (2) आठ (3) दस (4) बारह

जैनधर्मे उत्तमक्षमादि कति धर्मा: मन्यन्ते ?

(1) षष्ठ (2) अष्ट (3) दश (4) द्वादश

69. किस धर्म की आराधना में योगों की सरलता को मुख्य माना है ?

(1) उत्तमक्षमा (2) उत्तममार्दव

(3) उत्तम आर्जव (4) उत्तम संयम

कस्य धर्मस्य आराधने योगानां सारल्यं प्रमुख: मन्यते?

(1) उत्तमक्षमा (2) उत्तममार्दव: (3) उत्तम आर्जव: (4) उत्तम संयम:

70. अन्तरंग में तृष्णा और लोभ को दूर कर समताभाव और सन्तोष धारण करना किस धर्म में कहा गया है ?

(1) उत्तमसत्य में (2) उत्तमशौच में

(3) उत्तमत्याग में (4) उत्तमतप में

अन्तरंगेण तृष्णालोभश्च दूरीकृत्यसमताभावंसन्तोषाारणंच कस्मिन् धर्मेण उच्यते ?

(1) उत्तम-सत्ये (2) उत्तम-शौचे (3) उत्तम-त्यागे (4) उत्तम-तपे

71. समस्त परिग्रह का त्यागकर "मेरा कुछ भी नहीं है" ऐसा निर्लोभ भाव रखना कौन-सा धर्म है ?

(1) उत्तम तप (2) उत्तम त्याग

(3) उत्तम आकिचन्य (4) उत्तम ब्रह्मचर्य

सम्पूर्णपरिग्रहस्य त्यागं कृत्वा "मम किञ्चिदपि नास्ति" - एवं निर्लोभभावधारणं कीदृश: धर्म: अस्ति?

(1) उत्तम-तप: (2) उत्तम-त्याग: (3) उत्तम-आकिचन्य: (4) उत्तम-ब्रह्मचर्य:

72. इन्द्रिय और मन पर विजय पाना तथा षट् काय के जीवों की रक्षा करना किस धर्म के स्वरूप में कहा गया है ?

(1) उत्तम मार्दव (2) उत्तम संयम

(3) उत्तम तप (4) उत्तम त्याग

इन्द्रियमनविजयं षट्कायजीवरक्षाकरणं च कस्यधर्मस्य स्वरूपे उक्त: ?

(1) उत्तम-मार्दव: (2) उत्तम-संयम: (3) उत्तम-तप: (4) उत्तम-त्याग:

73. जिनके पालने से अणुव्रतों में गुणों की वृद्धि होती है, उन्हें क्या कहते हैं ?

(1) अणुव्रत (2) महाव्रत

(3) गुणव्रत (4) शिक्षाव्रत

येन पालनेन अणुव्रतेषु गुणानां वृद्धिः भवति, तं किं उच्यते ?

(1) अणुव्रतः (2) महाव्रतः (3) गुणव्रतः (4) शिक्षाव्रतः

74. गुणव्रतों और शिक्षाव्रतों को क्या कहा जाता है ?

(1) देशव्रत (2) महाव्रत (3) शीलव्रत (4) गुणव्रत

गुणव्रतान् शिक्षाव्रतान् च किं कथ्यते ?

(1) देशव्रतः (2) महाव्रतः (3) शीलव्रतः (4) गुणव्रतः

75. गुणव्रत कितने होते हैं ?

(1) तीन (2) पांच (3) सात (4) नौ

गुणव्रताः कति ?

(1) त्रयः (2) पञ्च (3) सप्त (4) नव

76. किस व्रत में प्रयोजन रहित पापवर्द्धक क्रियाओं का त्याग होता है ?

(1) दिग्व्रत (2) देशव्रत

(3) अनर्थदण्डव्रत (4) वैयावृत्य

कस्मिन् व्रते प्रयोजनरहित पापवर्द्धकक्रियाणां त्यागः भवति?

(1) दिग्व्रते (2) देशव्रते (3) अनर्थदण्डव्रते (4) वैयावृत्ये

77. मरण पर्यन्त सूक्ष्म पापों की निवृत्ति के लिए दशों दिशाओं में आवागमन का परिमाण कर उससे बाहर नहीं जाना, कौन-सा व्रत है ?

(1) दिग्व्रत
(2) देशावकाशिक
(3) परिग्रहपरिमाणव्रत
(4) भोगोपभोगपरिमाणव्रत

मरणपर्यन्तसूक्ष्मपापानांनिवृत्यर्थं दशदिशावागमनस्य परिमाणं कृत्वा तद् बहि: मा गमनं रीतिकीदृश: व्रत: अस्ति?

(1) दिग्व्रत:
(2) देशावकाशिक:
(3) परिग्रहपरिमाणव्रत:
(4) भोगोपभोग परिमाणव्रत:

78. अनर्थदण्ड कितने होते हैं ?

(1) तीन (2) चार (3) पांच (4) छह

अनर्थदण्डानि कति भवन्ति ?

(1) त्रीणि (2) चत्वारि (3) पञ्च (4) षष्ठ

79. निष्प्रयोजन दूसरों को खेती, हिसंक व्यापार आदि करने की सलाह देना क्या कहलाता है ?

(1) हिंसादान
(2) पापोपदेश
(3) प्रमादचर्या
(4) अपध्यान

निष्प्रयोजन: परान् कृषि: हिंसकव्यापारादि कर्तुं उत्साहप्रदानं किं कथ्यते ?

(1) हिंसादान: (2) पापोपदेश: (3) प्रमादचर्या (4) अपध्यान:

80. मनोविकार पैदा करने वाली बुरी बातों को सुनना जिनसे विषय कषायों की वृद्धि हो, वह कौन-सा अनर्थदण्ड है ?

(1) अपध्यान
(2) दु:श्रुति
(3) पापोपदेश
(4) हिंसादान

मनोविकारदाताकुर्वार्ता श्रवणं येन विषयकषायाणां वर्धनं भवेत् तद् कीदृशं अनर्थदण्डं अस्ति?

(1) अपध्यान: (2) दु:श्रुति: (3) पापोपदेश: (4) हिंसादान:

81. बिना प्रयोजन माटी खोदना, पानी बहाना, पत्ते-शाखाएँ तोड़ना कौन-सा पाप है ?

(1) प्रमादचर्या (2) हिंसादान

(3) पापोपदेश (4) दु:श्रुति

निष्प्रयोजनं मृदाखननं- जल वाहनं -पत्रशाखा: त्रोटनं च कीदृश: पाप: अस्ति?

(1) प्रमादचर्या (2) हिंसादान: (3) पापोपदेश: (4) दु:श्रुति:

82. वे कौन से व्रत हैं, जिनके पालने से मुनिधर्म पालन करने की शिक्षा मिलती है ?

(1) देशव्रत (2) महाव्रत

(3) गुणव्रत (4) शिक्षाव्रत

ते कीदृश: व्रता: सन्ति, यै: पालनेन मुनिधर्मपालनस्य शिक्षां लभति?

(1) देशव्रत: (2) महाव्रत: (3) गुणव्रत: (4) शिक्षाव्रत:

83. संध्याकालों में एकान्त में योगों को स्थिर कर कुछ समय के लिए हिंसादि पापों से निवृत्त होकर आत्मध्यान करना कौन-सा व्रत है ?

(1) सामायिक (2) प्रोषधोपवास

(3) वैयावृत्य (4) कायक्लेश

संध्याकालेषु एकान्ते योगान् स्थिरीकृत्य स्वल्पसमायार्थं हिंसादि पापेभ्य: निवृत्तं भूत्वा आत्मध्यानकरणं कीदृश: व्रत: अस्ति ?

(1) सामायिक: (2) प्रोषधोपवास: (3) वैयावृत्य: (4) कायक्लेश:

84. जो वस्तुएँ बार-बार भोगने में आती हैं, वे क्या कहलाती हैं ?

(1) भोग (2) उपभोग

(3) भोगोपभोग (4) अनुपभोग

यानि वस्तुनि पुन:-पुन: भोगेषु आगच्छान्ति तानि कानि कथयन्ति ?

(1) भोग: (2) उपभोग: (3) भोगोपभोग: (4) अनुपभोग:

85. शिक्षाव्रत कितने होते हैं ?

(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पांच

शिक्षाव्रता: कति भवन्ति?

(1) द्वय: (2) त्रय: (3) चत्वार: (4) पञ्च

86. जिनवाणी के उपदेश की पद्धति को क्या कहते हैं ?

(1) योग (2) अनुयोग (3) बोध (4) विबोध

जिनवाण्या: उपदेशपद्धति किं कथ्यते ?

(1) योग: (2) अनुयोग: (3) बोध: (4) विबोध:

87. जैनवाङ्मय को कितने भागों में विभक्त किया गया है ?

(1) दो (2) चार (3) छह (4) आठ

जैनवाङ्मयं कति भागेषु विभक्ता:?

(1) द्वय: (2) चत्वार: (3) षष्ठ (4) अष्ट

88. 'हरिवंशपुराण' किस अनुयोग का ग्रन्थ है ?

(1) प्रथमानुयोग का (2) करनानुयोग का
(3) चरणानुयोग का (4) द्रव्यानुयोग का

हरिवंशपुराण: कस्य अनुयोगस्य ग्रन्थ: अस्ति?

(1) प्रथमानुयोगस्य (2) करणानुयोगस्य (3) चरणानुयोगस्य (4) द्रव्यानुयोगस्य

89. श्रमणों और श्रावकों की आचार-संहिता का प्रतिपादक अनुयोग कौन-सा है ?

(1) प्रथमानुयोग (2) करणानुयोग
(3) चरणानुयोग (4) द्रव्यानुयोग

श्रमणाणां श्रावकाणां च आचारसंहिताया: प्रतिपादक: अनुयोग: क: अस्ति?

(1) प्रथमानुयोग: (2) करणानुयोग: (3) चरणानुयोग: (4) द्रव्यानुयोग:

90. त्रिलोक का वर्णन किस अनुयोग में होता है ?

(1) प्रथमानुयोग (2) करणानुयोग

(3) चरणानुयोग (4) द्रव्यानुयोग

त्रिलोकस्य वर्णनं कस्मिन् अनुयोगे भवति?

(1) प्रथमानुयोगे (2) करणानुयोगे (3) चरणानुयोगे (4) द्रव्यानुयोगे

91. जीव-अजीव तत्त्व, पुण्य-पाप बन्ध-मोक्ष, का मुख्यरूप से प्रतिपादन इस अनुयोग में होता है :

(1) द्रव्यानुयोग में (2) चरणानुयोग में

(3) करणानुयोग में (4) प्रथमानुयोग में

जीव-अजीव-तत्त्वः, पुण्य-पाप-बन्ध-मोक्षादिमुख्यरूपेण प्रतिपादकः अनुयोगः अस्ति -

(1) द्रव्यानुयोगः (2) चरणानुयोगः (3) करणानुयोगः (4) प्रथमानुयोगः

92. इच्छाओं का रोकना क्या कहलाता है ?

(1) त्याग (2) तप (3) दान (4) धर्म

कामनानिरोध किमुच्यते ?

(1) त्यागः (2) तपः (3) दानः (4) धर्मः

93. तप के मूलतः कितने भेद हैं ?

(1) दो (2) चार (3) छह (4) आठ

तपानां कति भेदाः सन्ति?

(1) द्वयः (2) चत्वारः (3) षष्ठ (4) अष्ट

94. आभ्यन्तर तप कितने प्रकार का है ?

(1) चार (2) छह (3) आठ (4) दस

आभ्यन्तरतपस्य कति प्रकारः सन्ति?

(1) चत्वारः (2) षष्ट (3) अष्ट (4) दश

95. किये गये अपराधों का शोधन कौन-से तप में किया जाता है ?

(1) प्रायश्चित्त (2) वैयावृत्य

(3) स्वाध्याय (4) कायक्लेश

कृतापराधशोधनं कस्मिन् तपे भवति?

(1) प्रायश्चित: (2) वैयावृत्य: (3) स्वाध्याय: (4) कायक्लेश:

96. इन्द्रिय और कषायों को जीतने के लिए चारों प्रकार के आहार का त्याग कौन-से तप में होता है ?

(1) अवमोदर्य (2) अनशन

(3) रसपरित्य (4) विविक्तशय्यासन

इन्द्रियकषायाणां विजेतुं चतुर्णां आहाराणां परित्याग: कीदृशे तपे भवति?

(1) अवमोदर्य: (2) अनशन:

(3) रसपरित्य: (4) विविक्तशय्यासन:

97. पूज्य पुरुषों को देखकर खड़े होना, उन्हें नमन करना आदि कौन-से तप में होता है ?

(1) प्रायश्चित्त (2) विनय

(3) वैयावृत्य (4) कायक्लेश

पूज्यपुरुषान् अवलोक्य उत्थानं नमनं च कीदृशे तपे भवति?

(1) प्रायश्चित: (2) विनय: (3) वैयावृत्य: (4) कायक्लेश:

98. आहारचर्या के समय अटपटी प्रतिज्ञाएँ लेकर तदनुसारप्रवर्तन कौन से तप में होता है ?

(1) अनशन (2) ऊनोदर

(3) वृत्तिपरिसंख्यान (4) रसपरित्याग

आहारचर्यावसरे अनर्गलप्रतिज्ञाधारणं एवं तदनुसाराचरणं कीदृशे तपे भवति?

(1) अनशन: (2) ऊनोदर: (3) वृत्तिपरिसंख्यान: (4) रसपरित्याग:

99. किसी एक आलम्बन पर मन को स्थिर करना कौन-सा तप है ?

(1) व्युत्सर्ग (2) विनय

(3) वैयावृत्य (4) ध्यान

कस्यचिद् एकालम्बनैव मन: स्थिरीकरणं कीदृश:तप: अस्ति?

(1) व्युत्सर्ग: (2) विनय: (3) वैयावृत्य: (4) ध्यान:

100. स्वाध्याय तप के भेद कितने हैं ?

(1) तीन (2) चार (3) पांच (4) छह

स्वाध्यायतपभेदा: कति सन्ति?

(1) त्रय: (2) चत्वार: (3) पञ्च (4) षष्ठ

101. भूख से कम भोजन/आहार किस तप में लिया जाता है ?

(1) अनशन (2) अवमोदर्य

(3) विनय (4) वैयावृत्य

स्वल्पाहार: कस्मिन् तपे सम्मिलित: ?

(1) अनशन: (2) अवमोदर्य: (3) विनय: (4) वैयावृत्य:

102. कौन-सा तप आभ्यन्तर तप है ?

(1) ऊनोदर (2) अनशन

(3) ध्यान (4) रसपरित्याग

क: तप: आभ्यन्तर: अस्ति?

(1) ऊनोदर: (2) अनशन: (3) ध्यान: (4) रसपरित्याग:

103. क्रूर परिणामों से अनुबन्धित ध्यान कौन सा ध्यान है ?

(1) निदानजन्यआर्त (2) पीड़ाजन्यआर्त

(3) रौद्रध्यान (4) धर्मध्यान

क्रूरपरिणामै: अनुबन्धितध्यान: क: अस्ति ?

(1) निदानजन्य-आर्त: (2) पीड़ाजन्य-आर्त:

(3) रौद्रध्यान: (4) धर्मध्यान:

104. लोक के आकार आदि का चिन्तन कौन-से ध्यान में होता है ?

(1) आज्ञाविचय में (2) अपायविचय में

(3) वियाक विचय में (4) संस्थान विचय में

लोकस्य आकार विषयकचिन्तन: केन ध्याने भवति ?

(1) आज्ञाविचये (2) अपायविचये (3) विपाकविचये (4) संस्थानविचये

105. मोक्ष का मार्ग किसे कहा गया हैं ?

(1) शल्यत्रय को (2) गुप्तित्रय को

(3) रत्नत्रय को (4) कर्मत्रय को

मोक्षमार्ग: कं उच्यते ?

(1) शल्यत्रयम् (2) गुप्तित्रयम् (3) रत्नत्रयम् (4) कर्मत्रयम्

106. मोक्षमहल की पहल सीढ़ी किसे कहा जाता है ?

(1) सम्यग्दर्शन को (2) सम्यग्ज्ञान को

(3) सम्यक्चारित्र को (4) सम्यक्तप को

मोक्षप्रासादस्य प्रथम: सोपान: कं उच्यते ?

(1) सम्यग्दर्शनं (2) सम्यग्ज्ञानं (3) सम्यक्चरित्रं (4) सम्यक्तपं

107. सम्यग्दर्शन के कितने अंग हैं ?

(1) चार (2) आठ (3) बारह (4) सोलह

सम्यग्दर्शनस्य कति अङ्गानि सन्ति?

(1) चत्वारि (2) अष्ट (3) द्वादशानि (4) षोडशानि

108. जैनदर्शनानुसार जीवों को सुख-दु:ख कौन देता है ?

(1) ब्रह्मा (2) विष्णु (3) ईश्वर (4) कर्म

जैनमतानुसारं क: जीवानांसुख-दु:खकारण: ?

(1) ब्रह्मा (2) विष्णु: (3) ईश्वर: (4) कर्म:

109. कर्मों के मूलत: कितने भेद हैं ?

(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पांच

कर्माणां मूलत: कति भेदा: सन्ति?

(1) द्वय: (2) त्रय: (3) चत्वार: (4) पञ्च

110. द्रव्यकर्म कितने प्रकार का है ?

(1) चार (2) छह (3) आठ (4) दस

द्रव्यकर्म: कति प्रकाराणि सन्ति ?

(1) चत्वारि (2) षष्ठ (3) अष्ट (4) दश

111. भव्य जीवों की अपेक्षा जीव और कर्मों का सम्बन्ध कैसा है ?

(1) सादि-सान्त (2) अनादि —सान्त

(3) अनादि — अननन्त (4) सादि — अनन्त

भव्यजीवानां अपेक्षया जीवकर्माणां सम्बन्ध: कीदृश: ?

(1) सादि-सान्त: (2) अनादि- सान्त: (3) अनादि- अनन्त: (4) सादि-अनन्त:

112. कौन-सा कर्म जीवों को विभिन्न गतियों में रोके रखता है ?

(1) आयुकर्म (2) गोत्रकर्म

(3) नामकर्म (4) अन्तरायकर्म

कीदृशः कर्मः जीवान् विभिन्नगतिषु स्थिरीकुर्वति ?

(1) आयु कर्मः (2) नामकर्मः (3) गोत्रकर्मः (4) अन्तरायकर्मः

113. इनमें अघातिया कर्म कौन-सा है ?

(1) ज्ञानावरण (2) दर्शनावरण

(3) मोहनीय (4) वेदनीय

एतेषु अघातिया- कर्मः कः आस्ति ?

(1) ज्ञानावरणः (2) दर्शनावरणः (3) मोहनीयः (4) वेदनीयः

114. नाना प्रकार के शरीरों की रचना किस कर्म के उदय से होती है ?

(1) मोहनीयकर्म (2) वेदनीय कर्म

(3) नाम कर्म (4) गोत्रकर्म

नानाप्रकाराणां शरीररचना कस्य कर्मस्य उदयेन भवति?

(1) मोहनीय कर्मेण (2) वेदनीय कर्मेण (3) नामकर्मेण (4) गोत्रकर्मेण

115. ऊँच-नीच घरानों में जन्म किस कर्म के उदय से होता है ?

(1) आयुकर्म (2) नामकर्म

(3) गोत्रकर्म (4) अन्तरायकर्म

कुलीनाकुलीनगृहेषु जन्मः कस्य कर्मस्य उदयेन भवति?

(1) आयुकर्मेण (2) नामकर्मेण (3) गोत्रकर्मेण (4) अन्तरायकर्मेण

116. कर्मों की स्थिति और अनुभाग का घट जाना क्या कहलाता है ?

(1) उत्कर्षण (2) अपकर्षण

(3) उदीरणा (4) उपशम

कर्माणां स्थिति: अनुभागश्च क्षरणं किमुच्यते ?

(1) उत्कर्षण: (2) अपकर्षण: (3) उदीरणा (4) उपशम:

117. एक कर्म का एक दूसरे सजातीय कर्मरूप हो जाने को क्या कहते हैं ?

(1) उपशम (2) उदीरणा

(3) संक्रमण (4) क्षय

एकस्य कर्मस्य अपरे सजातीयकर्मरूपे परिवर्त्तनं किं उच्यते ?

(1) उपशम: (2) उदीरणा (3) संक्रमण: (4) क्षय:

118. बहुल आरम्भ और परिग्रह किस कर्म के आस्रव का कारण है ?

(1) मनुष्यायु के (2) तिर्यंचायु के

(3) देवायु के (4) नरकायु के

बहु-आरम्भ: परिग्रहश्च कस्य कर्मस्य आस्रवस्य कारणमस्ति?

(1) मनुष्यायु: (2) तिर्यंचायु: (3) देवायु: (4) नरकायु:

119. रोने और रुलाने से किस कर्म का आस्रव होता है ?

(1) नीचगोत्र (2) अशुभनामकर्म

(3) असातावेदनीय (4) दर्शनमोहनीय

रुदनं रोदनं च कस्य कर्मस्य आस्रव: भवति?

(1) नीचगोत्रस्य (2) अशुभनामकर्मस्य

(3) असातावेदनीयस्य (4) दर्शनमोहनीयस्य

120. जैनदर्शन में प्रमाण किसे कहा जाता है ?

(1) निर्विकल्पज्ञान को (2) सम्यग्ज्ञान को

(3) इन्द्रिय व्यापार को (4) कारक साकल्य को

जैनदर्शने प्रमाणस्याशयं किम् ?

(1) निर्विकल्पज्ञानं (2) सम्यग्ज्ञानं (3) इन्द्रियव्यापारं (4) कारकसाकल्यं

121. प्रमाण के मूलत: कितने भेद हैं ?

(1) दो (2) चार (3) छह (4) आठ

प्रमाणस्य कति भेदा: सन्ति?

(1) द्वय: (2) चत्वार: (3) षष्ठ (4) अष्ट

122. जैनदर्शनानुसार प्रत्यक्ष प्रमाण कितने प्रकार का है ?

(1) तीन (2) पांच (3) सात (4) नौ

जैनदर्शनानुसारं प्रत्यक्षप्रमाण: कति प्रकारा: सन्ति?

(1) त्रय: (2) पञ्च (3) सप्त (4) नव

123. जैनदर्शन में विकलादेशी किसे कहा गया है ?

(1) द्रव्य को (2) गुण को

(3) प्रमाण को (4) नय को

जैनदर्शने 'विकलादेशी' इति कं उच्यते ?

(1) द्रव्यं (2) गुणं (3) प्रमाणं (4) नयं

124. नय के भेद कितने हैं ?

(1) पांच (2) सात (3) नौ (4) ग्यारह

नयस्य कति भेदा: ?

(1) पञ्च (2) सप्त (3) नव (4) एकादश

125. शब्दभेद से अर्थभेद मानने वाला नय कौन-सा है ?

(1) शब्दनय (2) अर्थनय

(3) समभिरुढनय (4) एवंभूतनय

'शब्दभेदेन अर्थभेद:' इति मतावलम्बी नय: क: अस्ति ?

(1) शब्दनय: (2) अर्थनय: (3) समभिरुढनय: (4) एवंभूतनय:

126. द्रव्य को गौण करके वर्तमान की क्षणवर्ती पर्याय को मुख्यरूप से कौन-सा नय ग्रहण करता है ?

(1) नैगम नय (2) व्यवहारनय

(3) ऋजुसूत्रनय (4) शब्दनय

द्रव्यं गौणीकृत् वर्त्तमानस्य क्षणवर्तीपर्यायं मुख्यरूपेण क: नय: स्वीकरोति ?

(1) नैगमनय: (2) व्यवहार-नय: (3) ऋजुसूत्र-नय: (4) शब्दनय:

127. प्रमाण और नय के अनुसार प्रचलित हुए लोकव्यवहार को क्या कहा जाता है ?

(1) नय (2) निक्षेप (3) निर्देश (4) स्वामित्व

प्रमाणनयानुसारं प्रचलितं लोकव्यवहारं किं उच्यते ?

(1) नय: (2) निक्षेप: (3) निर्देश: (4) स्वामित्व:

128. निक्षेप के कितने प्रकार हैं ?

(1) दो (2) चार (3) छह (4) आठ

निक्षेपस्य कति प्रकारा: सन्ति?

(1) द्वय: (2) चत्वार: (3) षष्ठ (4) अष्ट

129. नाम के अनुरूप गुण न होने पर भी लोकव्यवहार में जो नामकरण किया जाता है, वह कौन सा निक्षेप है ?

(1) द्रव्यनिक्षेप (2) भावनिक्षेप

(3) नामनिक्षेप (4) स्थापनानिक्षेप

नामानुरूपं गुणंविना लोकव्यवहारे यः नामकरणं भवति, सः कीदृशः निक्षेपः अस्ति?

(1) द्रव्यनिक्षेपः (2) नामनिक्षेपः (3) भावनिक्षेपः (4) स्थापना-निक्षेपः

130. किस निक्षेप में पूज्य-अपूज्य का व्यवहार होता है ?

(1) नामनिक्षेप (2) स्थापनानिक्षेप

(3) द्रव्यनिक्षेप (4) भावनिक्षेप

कस्मिन् निक्षेपे पूज्य-अपूज्य व्यवहारं भवति?

(1) नामनिक्षेपे (2) स्थापनानिक्षेपे (3) द्रव्यनिक्षेपे (4) भावनिक्षेपे

131. केवल वर्तमान पर्याय की मुख्यता से किसी पदार्थ को तद्रूप जानना और कहना कौन-सा निक्षेप है ?

(1) भाव निक्षेप (2) द्रव्य निक्षेप

(3) स्थापना निक्षेप (4) नाम निक्षेप

वर्त्तमानपर्यायस्य मुख्यतया कामपि पदार्थं तद्रूपेण ज्ञानं कथनं च कीदृशः निक्षेपः अस्ति?

(1) भावनिक्षेपः (2) द्रव्यनिक्षेपः (3) स्थापनानिक्षेपः (4) नामनिक्षेपः

132. वस्तु के सर्वदेश को कौन जानता है ?

(1) प्रमाण (2) नय (3) निक्षेप (4) निर्देश

वस्तुनां सर्वदेशान् कः जानाति?

(1) प्रमाणः (2) नयः (3) निक्षेपः (4) निर्देशः

133. द्रव्य का आगामी या पूर्व पर्याय की अपेक्षा से कथन करना कौन-सा निक्षेप है ?

(1) नाम निक्षेप (2) स्थापना निक्षेप

(3) द्रव्य निक्षेप (4) भाव निक्षेप

द्रव्यस्य आगामी-पूर्वपर्यायस्य वा अपेक्षया कथनं कीदृशः निक्षेपः अस्ति?

(1) नाम निक्षेपः (2) स्थापना निक्षेपः (3) द्रव्यनिक्षेपः (4) भावनिक्षेपः

134. एक ही वस्तु में परस्पर विरोधी अनेक धर्मों को मानना क्या कहलाता है ?

(1) स्याद्वाद (2) अनेकान्तवाद

(3) समाजवाद (4) भौतिकवाद

एकैव वस्तुषु परस्परविरोधीबहुधर्मान् स्वीकारं किं उच्यते ?

(1) स्याद्वादः (2) अनेकान्तवादः (3) समाजवादः (4) भौतिकवादः

135. अनेकान्तवादी कौन हैं ?

(1) बौद्ध (2) वैशेषिक (3) मीमांसक (4) जैन

अनेकान्तवादी कः अस्ति?

(1) बौद्धः (2) वैशेषिकः (3) मीमांसकः (4) जैनः

136. जैनदर्शन में अनेक धर्मात्मक वस्तु के कथन करने की पद्धति को क्या कहते हैं ?

(1) स्याद्वाद (2) अनेकान्तवाद

(3) प्रगतिवाद (4) प्रयोगवाद

जैनदर्शने बहुधर्मात्मकवस्तुकथन पद्धतिः किं उच्यते ?

(1) स्याद्वादः (2) अनेकान्तवादः (3) प्रगतिवादः (4) प्रयोगवादः

137. विधि और निषेध के विकल्प से अर्थ में शब्द की प्रवृत्ति कितने प्रकार की होती है ?

(1) तीन (2) सात (3) नौ (4) ग्यारह

विधिनिषेधविकल्पेन अर्थे शब्दस्य प्रवृत्तिः कति प्रकाराणि भवन्ति?

(1) त्रिसः (2) सप्त (3) नव (4) एकादश

138. 'स्यादवक्तव्य' कौन-सा भंग है ?

(1) दूसरा (2) तीसरा (3) चौथा (4) पांचवा

'स्यादवक्तव्यः' कीदृशः भङ्गः अस्ति?

(1) द्वितीयः (2) तृतीयः (3) चतुर्थः (4) पञ्चम

139. वे कौन से आचार्य हैं, जिनके नाम से परवर्ती आचार्य-परम्परा अपने को गौरवान्वित अनुभव करती है ?

(1) आ.श्री गणुधर (2) आ. श्री धरसेन

(3) आ. श्री कुन्दकुन्द (4) आ. श्री भूतबली

ते के आचार्यः यस्य नामेन परवर्तीआचार्यपरम्परा गौरवान्वितः अनुभवन्ति?

(1) आ.श्रीगुणधरः (2) आ. श्रीधरसेनः

(3) आ. श्री कुन्दुकुन्दः (4) आ. श्री भूतबली

140. 'समयपाहुड' कौन-सा ग्रन्थ है ?

(1) काव्यग्रन्थ (2) कथाग्रन्थ

(3) पौराणिकग्रन्थ (4) आध्यात्मिकग्रन्थ

'समयपाहुड' इति कीदृशः ग्रन्थः अस्ति?

(1) काव्यग्रन्थः (2) कथाग्रन्थः (3) पौराणिकग्रन्थः (4) आध्यात्मिकग्रन्थः

141. 'बारसाणुपेक्खा' किन आचार्य की कृति है ?

(1) स्वामी कार्तिकेय की (2) आ.श्री कुन्दकुन्द की

(3) आ. श्री पूज्यपाद की (4) आ. श्री वीरसेन की

'बारसाणुपेक्खा' कस्य आचार्यस्य कृतिरस्ति ?

(1) स्वामीकार्तिकेयस्य (2) आचार्य श्रीकुन्दकुन्दस्य

(3) आचार्यश्रीपूज्यपादस्य (4) आचार्यश्रीवीरसेनस्य

142. धवलादि सिद्धान्त ग्रन्थों का सार लेकर किस ग्रन्थ की रचना हुई है ?

(1) नियमसार (2) रयणसार

(3) त्रिलोकसार (4) गोम्मटसार

धवलादिसिद्धान्त ग्रन्थाणां सारं गृहीत्वा कस्य ग्रन्थस्य रचना अभवत् ?

(1) नियमसार: (2) रयणसार: (3) त्रिलोकसार: (4) गोम्मटसार:

143. कौन सी कृति आ० श्री नेमिचन्द्र सि.च.की नहीं है ?

(1) समयसार (2) क्षपणासार

(3) लब्धिसार (4) त्रिलोकसार

कस्या: कृति: आचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य नास्ति?

(1) समयासार: (2) क्षपणासार: (3) लब्धिसार: (4) त्रिलोकसार:

144. "सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका" किस ग्रन्थ की टीका है ?

(1) क्षपणासार (2) गोम्मटसार

(3) सिद्धान्तसार (4) तत्त्वार्थसार

'सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका' इति कस्य ग्रन्थस्य टीकास्ति ?

(1) क्षणसार: (2) गोम्मटसार: (3) सिद्धान्तसार: (4) तत्त्वार्थसार:

145. किन आचार्य को ''कलिकालसर्वज्ञ'' कहा जाता था ?

(1) श्री प्रभाचन्द्रसूरि को (2) श्री हेमचन्द्रसूरि को

(3) श्री जिनप्रभसूरि को (4) श्री उद्योतनसूरि को

कं आचार्यं 'कलिकालसर्वज्ञः' इति संज्ञा प्रदीयते ?

(1) श्रीप्रभाचन्द्रसूरिं (2) श्रीहेमचन्द्रसूरिं (3) श्रीजिनप्रभसूरिं (4) श्रीउद्योतनसूरिं

146. आ. श्री हेमचन्द्र की रचना कौन सी है ?

(1) छन्दोऽनुशासन (2) छन्दकौमुदी

(3) वृत्तरत्नाकार (4) अलंकारचिन्तामणि

आचार्यश्रीहेमचन्द्रस्य रचना का अस्ति ?

(1) छन्दोऽनुशासनः (2) छन्दकौमुदी

(3) वृत्तरत्नाकर (4) अलंकारचिन्तामणि

147. 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' किन आचार्य की कृति है ?

(1) आ. श्री सोमदेव (2) आर. श्री हरिभद्र

(3) आ. श्री हेमचन्द्र (4) आ. श्री समन्तभद्र

'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितः' कस्य आचार्यस्य कृतिरास्ति?

(1) आचार्य श्री सोमदेवः (2) आचार्य श्रीहरिभद्रः

(3) आचार्य श्रीहेमचन्द्रः (4) आचार्य श्रीसमन्तभद्रः

148. कौन-सी कृति श्री हरिभद्रसूरि की नहीं है ?

(1) धूर्ताख्यान (2) षड्दर्शनसमुच्चय

(3) धर्मपरीक्षा (4) समराइच्चकहा

का कृतिः श्री हरिभद्रसूरिमहोदयस्य नास्ति?

(1) धूर्ताख्यानः (2) षड्दर्शनसमुच्चयः

(3) धर्मपरीक्षा (4) समराइच्चकहा

149. 'समराइच्चकहा' कौन-सा कथा-ग्रन्थ है ?

(1) धर्मकथा (2) दिव्यकथा

(3) अर्थकथा (4) कामकथा

'समराइच्चकहा'- इति कः कथाग्रन्थः अस्ति ?

(1) धर्मकथा (2) दिव्यकथा (3) अर्थकथा (4) कामकथा

150. श्री हरिभद्रसूरि की कृतियों की भाषाएँ कौन-सी हैं ?

(1) प्राकृत-अपभ्रंश (2) अपभ्रंश-हिन्दी

(3) संस्कृत — प्राकृत (4) संस्कृत-पाली

श्रीहरिभद्रसूरिमहोदस्य कृतिणां भाषाः काः सन्ति?

(1) प्राकृत-अपभ्रंशः (2) अपभ्रंश - हिन्दी

(3) संस्कृत- प्राकृतः (4) संस्कृत - पाली

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर
केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में ***लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त,*** लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. ***उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।***
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. ***उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।***
6. ***ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।***
7. ***उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।***
8. ***प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।***
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ***ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।***
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त *केवल* ***ओ एम आर उत्तर-पत्र*** परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।